

FEBRUARY

2020

जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION

जल चर्चा

Save water

जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION

Contest!

Water Heroes
Share Your Stories



पानी बचाओ
वाटर हीरो कहलाओ!

आज ही भेजें:

जल संरक्षण पर 1-5 मिनट का वीडियो

अधिकतम 300 शब्दों तक जल संचयन की कहानी

पाइये 10,000 रुपये जीतने का मौका।

आवेदन करने के लिए waterheroes.cgwb@gmail.com पर
अपनी प्रविष्टियां हमें भेजें।

अधिक जानकारी के लिए देखें

www.mygov.in अथवा www.jalshakti-dowr.gov.in

CONTENTS

- मुख्य संपादक की कलम से 2
- रानी की वाव 3
- Conservation 4
- रावी नदी 5
- Know Your River 6-7
- Mann Ki Baat 8
- हीराकुड बाँध, ओडिशा 9
- Padma Awards 10-11
- 11th Water Talk 12
- गंगा यात्रा 13
- International 14
- Water Warrior 15
- People's Initiative 16-18
- Namami Gange 19-20
- News In Brief 21-27
- NGO 28
- Snippets 29-30
- In Newspaper 31
- Institute 32



3 विश्व विरासत स्थलों की सूची में से एक – 'रानी की वाव'



5 रावी नदी



8 Mann Ki Baat



9 हीराकुड बाँध, ओडिशा



12 11th Water Talk by National Water Mission



13 'गंगा यात्रा' : उत्तर प्रदेश सरकार की जागरूकता हेतु अनूठी पहल



15 जल योद्धा–गूगल की नौकरी छोड़ तालाब और झीलों को साफ करने का उठाया जिम्मा



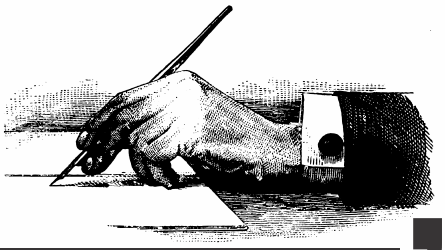
19-20 Namami Gange

Chief Editor : U.P. Singh
Editor : Nitishwar Kumar
Co-Editor : Girraj Goyal
Sub - Editor : Mohit Sharma
Design & Comm. Team : Fusion Corporate Solutions Pvt. Ltd.
Photographer : Arvind Singh Tomar
Publisher : B.H.T. Vaiphei
[as Under Secretary (IEC), Ministry of Jal Shakti, Do WR, RD & GR
Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi -110001]
Printer : Krishna Enterprises
2070/5, Chuna Mandi, Paharganj, New Delhi - 110055

Reproduction in any form is prohibited without written permission. Any dispute related to the content of the magazine should be addressed to the publisher.



मुख्य संपादक की कलम से....



जल चर्चा के एक नये अंक को लेकर हम फिर एक बार आपके सामने प्रस्तुत हैं। जैसा कि हमने पहले भी उल्लेख किया है, हमारी यह अनवरत कोशिश रही है कि अगला अंक पहले अंक से और ज्यादा ज्ञानप्रद और रोचक हो।

हमने पिछले अंक से एक नये स्तम्भ की शुरुआत की है। यह स्तम्भ है हमारे पुरातन जल धरोहरों से आपको परिचय कराने की। इस श्रृंखला की दूसरी कड़ी में इस बार हम प्रस्तुत कर रहे है- 'रानी की वाव' जो पूरे विश्व में एक मात्र बावड़ी है जो विश्व धरोहर सूची में शामिल है। हमारी ये ऐतिहासिक बावड़ियाँ दर्शाती हैं कि हमारा जल प्रबंधन में एक गौरवशाली इतिहास रहा है। जल के प्रति सम्मान को हमें वापस लाना है।

मैंने पिछले अंक में पानी एवं पर्यावरण के लिए उल्लेखनीय कार्य करने वाले श्री पोपटराव पवार एवं श्री अनिल जोशी का जिक्र किया था जिन्हें इस वर्ष क्रमश: पद्मश्री एवं पद्मभूषण से सम्मानित किया गया है। इस अंक में उनके कार्यों से आप को अवगत करा रहे हैं। पानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले एक और जल योद्धा को हम बधाई देना चाहेंगे जिन्हें गत वर्ष पद्मश्री से नवाजा गया था। झाबुआ के गाँधी कहे जाने वाले श्री महेश शर्मा ने भागीरथ बन हलमा अभियान से शिवगंगा बहा दी। दृढ़ निश्चय के दम पर वनवासियों के साथ मिलकर हजारों जल संरचनाओं के माध्यम से झाबुआ को पानीदार बनाने में सफलता हासिल की। आप सभी, पानी के लिए समर्पित हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं।

हमारी प्रशासनिक व्यवस्था में जिले के कलेक्टर या डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट का बहुत ही महत्व होता है। आज हमारे पास ऐसे कई उदाहरण है जहाँ जिला कलेक्टर के नेतृत्व में जनभागीदारी से पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए अनुकरणीय कार्य हुए हैं। मैंने पिछले अंकों में बाँदा जिले के "कुएँ-तालाब जियाओ अभियान" का जिक्र किया था। पुडूचेरी के कराइकाल जिले के तत्कालीन कलेक्टर विक्रांत राजा के नेतृत्व में 'नामनीर' अभियान शुरु किया, जिसके अंतर्गत तीन महीने में ही 178 जल स्त्रोतों को पुनर्जीवित किया गया। उत्तराखंड के उधमसिंह नगर के अधिकांश पोखरी-तालाब या तो अतिक्रमण के शिकार थे या सूख चुके थे। जिला प्रशासन की पहल से करीब 500 ऐसे तालाबों को चिन्हित किया गया और मनरेगा योजना के अंतर्गत उनका पुनरुद्धार किया गया।

नदियाँ हमारी जीवन रेखा होती है। दु:ख का विषय है कि छोटी-छोटी अनेकों नदियाँ आज विलुप्त होने की कगार पर हैं। नदियों को पुनर्जीवित करने की दिशा में भी अनेक जिलों में उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। चित्रकूट जिला प्रशासन ने पुण्य सलिला मंदाकिनी को पुनर्जीवित करने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किए हैं तो अयोध्या जिला प्रशासन ने तमसा नदी को जनभागीदारी से एक नई जिंदगी दी है। बिहार के सितामढ़ी जिले के डीएम अभिलाषा कुमारी शर्मा के नेतृत्व में लखनदेई नदी में फिर से कल-कल धारा बहाने की भरपूर कोशिश की जा रही है।

नदियों एवं तालाबों को जिंदा करने की ये मुहिम देशव्यापी हो रही है। हमारी कोशिश है कि पानी एवं नदी हर जिला कलेक्टर की प्रमुखताओं में एक हो। इस उद्देश्य से हमने डिविजन स्तर पर जिला कलेक्टरों के साथ चर्चा शुरु की है। फरवरी के महीने में दो ऐसी बैठकें क्रमश: सहारनपुर एवं बाँदा में आयोजित की गई हैं।

हमने एक साल पहले 'Water Talk' की शुरुआत की थी। मुझे आप को यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि पिछले एक साल में हर महीने हम नियमित रूप से इसका आयोजन करते आये हैं। इस अंक में हम ग्यारहवें 'Water Talk' की जानकारी दे रहे हैं। संत बलवीर सिंह जी, जो हमारे ग्यारहवें 'Water Talk' के वक्ता थे, ने न केवल जन सहयोग से काली बेन नदी को नया जीवन प्रदान किया है बल्कि अपशिष्ट प्रबंधन का भी एक आदर्श प्रस्तुत किया है।

हमेशा की तरह इस बार भी आप से गुजारिश है कि हमें अपने बहुमूल्य सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं से अनुग्रहित करें।

शुभेच्छाओं सहित

(उपेंद्र प्रसाद सिंह)

विश्व विरासत स्थलों की सूची में से एक – 'रानी की वाव'

जल चर्चा के पिछले संस्करण में हमने आपका परिचय राजस्थान की चांद बावड़ी से कराया था, जो पौराणिक जल संचयन पद्धति का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। गुजरात के पाटण जिले में स्थित 'रानी की वाव' भी जल संचयन की इस परम्परा का अनूठा उदाहरण है।

इस बावड़ी का निर्माण वर्ष 1063 में सोलंकी शासन के राजा भीमदेव प्रथम की स्मृति में उनकी पत्नी रानी उदयामति द्वारा करवाया गया था। सरस्वती नदी के तट पर बनी 7 तलों की यह वाव 64 मीटर लंबी, 20 मीटर चौड़ी तथा 27 मीटर गहरी है। इस वाव में 30 किलोमीटर लंबी रहस्यमयी सुरंग भी है, जो पाटण के सिद्धपुर में जाकर निकलती है। रानी की वाव को उत्तम वास्तुकला का जीवंत एवं बेजोड़ नमूना माना जाता है। यहाँ की मूर्तिकला तथा नक्काशी में राम, वामन, कल्कि जैसे विष्णु के अवतार, महिषासुरमर्दिनी आदि को भव्य रूप में उकेरा गया है।

रानी की वाव

- लगभग 1000 साल पुरानी है 'रानी की वाव'
- ₹100 के नोट पर है रानी की वाव का चित्र
- यहाँ है 30 किलोमीटर लंबी रहस्यमयी सुरंग
- यूनेस्को के विश्व विरासत स्थल में शामिल है यह वाव

22 जून 2014 को यूनेस्को के विश्व विरासत स्थल में इस वाव को शामिल किया गया और जुलाई 2018 में भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा ₹100 के नोट पर इसे चित्रित किया गया है। यूनेस्को ने इसे तकनीकी विकास का एक अलौकिक उदाहरण मानते हुए मान्यता प्रदान की है। इसमें जल-प्रबंधन की बेहतर व्यवस्था के साथ ही शिल्प कला का सौंदर्य भी झलकता है। रानी की वाव समस्त विश्व में ऐसी इकलौती बावड़ी है जो विश्व धरोहर सूची में शामिल हुई है। यह इस बात का सबूत भी है कि प्राचीन भारत में जल-प्रबंधन की व्यवस्था कितनी बेहतरीन थी। यह वाव 11वीं शताब्दी की भारतीय भूमिगत वास्तु संरचना और जल प्रबंधन प्रणाली में भूजल संसाधनों के उपयोग की तकनीक का सबसे विकसित और वृहद् उदाहरण है।

भारत में बावड़ी निर्माण व इनके उपयोग का एक लम्बा इतिहास रहा है। यह कहा जा सकता है कि ये बावड़ियाँ हमारे देश की बहुमूल्य और अभिन्न विरासत का प्रतीक हैं। जल प्रबंधन के सबसे पुराने तरीकों में से एक हैं ये बावड़ियां, इन्हें संजोए रखना हम सबकी ज़िम्मेदारी है। इन ऐतिहासिक धरोहरों को संरक्षित करने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा महत्वपूर्ण प्रयास किये जा रहे हैं। ऐसी ऐतिहासिक जल संरचनाओं को जीवित रखने हेतु जन भागीदारी आवश्यक है ताकि ये भविष्य में इतिहास के पन्नों तक ही सीमित न रह जाये।







Rejuvenation and inter-linking of ponds in Lal Burra Gram Panchayat increases water levels



The grassroots level planning and involvement is the most effective way of any water conservation effort. The commitment shown by Pandharwani Lalburra Gram Panchayat in Madhya Pradesh to recharge groundwater through inter-linking of ponds exemplifies the impact action at the grassroots level can make.

Marred by decreasing groundwater levels and scarcity of water, especially in dry seasons, the Gram Panchayat of Pandharwani Lalburra in Balaghat district took the decision to rejuvenate and link 5 ponds with each other through MGNREGA. The results were so encouraging that the district administration is now trying to emulate the same in nearby villages as well.

Shri Anees Khan, the Sarpanch of Pandharwani Gram Panchayat is happy with the results and believes that the inter-linking of ponds has ensured water availability in the area for years to come as groundwater levels have increased considerably. "The inter-linking of ponds has not only helped farmers but fishermen are also benefited as water availability has improved drastically," Shri Anees said. He added that the depth of the ponds was increased by 10-12 feet before linking them through canals in such a way that if one dries the excess water from another automatically fills it up. It is a remarkable way to harvest rainwater and keep village's water in village itself.

The district administration has also hailed the efforts as unique and praiseworthy. Shri Deepak Arya, District Collector, Balaghat district said: "This is a unique effort considering the importance water conservation has acquired over the past few years. This is good not only for the betterment of the economy of the area but also for the overall development of the local community. If such innovative efforts can be suitably replicated, it will help to manage water crisis in the water stressed area."



रावी नदी

रावी नदी, सिंधु नदी प्रणाली की पांच प्रमुख नदियों में से एक है। रावी नदी का वैदिक नाम परुशिनी और संस्कृत का नाम इरावती है। रावी नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के बडा बंगघाल में लगभग 4300 मीटर की ऊंचाई पर रोहतांग दर्रे के उत्तर में स्थित ग्लेशियर द्वारा उत्पन्न भादल और तांत-गारि की एक संयुक्त धारा से हुआ है। हिमाचल प्रदेश में जिला कांगड़ा और चंबा की यात्रा करने के बाद रावी पंजाब राज्य के पठानकोट जिले में प्रवेश करती है। वहाँ से यह गुरदासपुर और अमृतसर जिलों से गुजरती हुई पाकिस्तान में चली जाती है। यह नदी लगभग 720 किमी लंबी है, जिसमें से 320 किमी भारत में है (158 किमी हिमाचल प्रदेश में और 162 किलोमीटर पंजाब में है)। रावी की प्रमुख सहायक नदियाँ- भादल, तांत-गारि, सिउल, बैरा और उझ हैं। रावी नदी के आसपास के क्षेत्रों में कोई भारी या लघु उद्योग न होने से इसमे अधिक औद्योगिक कचरा और गंदगी नहीं गिरती है।

- **सिंधु नदी प्रणाली की 5 प्रमुख नदियों में से एक**
- **रावी नदी पर स्थित है रणजीत सागर बाँध**
- **सिन्धु जल संधि के तहत रावी नदी का पानी भारत को आवंटित है**

रावी नदी के महत्वपूर्ण तथ्य

- भारत और पाकिस्तान द्वारा हस्ताक्षरित सिंधु जल संधि के तहत रावी नदी का पानी भारत को आवंटित किया गया है।
- रावी नदी और इसकी सहायक नदियों पर कई प्रमुख परियोजनाएं बनाई गयी हैं, जैसे 180 मेगावाट क्षमता वाली बैरा-सिउल जलविद्युत परियोजना, 540 मेगावाट क्षमता वाली चमेरा-I जलविद्युत परियोजना, 600 मेगावाट क्षमता वाली रणजीत सागर बहुउद्देशीय परियोजना, 300 मेगावाट की क्षमता वाली चमेरा-II जलविद्युत परियोजना, 231 मेगावाट की क्षमता वाली चमेरा-III जलविद्युत परियोजना।
- रावी नदी का पानी रणजीत सागर बाँध के बाद माधोपुर हेडवर्क्स में 3 मुख्य नहरों कश्मीर, ऊपरी बारी दोआब नहर और हाईडल चैनल के माध्यम से सिंचाई के लिए भेजा जाता है। रावी नदी पर माधोपुर हेडवर्क्स 1902 में बनाया गया था। यह रन ऑफ द रिवर (जिसमे कोई भंडारण नहीं होता है) परियोजना है।



KNOW YOUR RIVER

क्या आप जानते है भारतवर्ष की प्रमुख नदियों के पौराणिक नाम और उनकी किंवदन्तियाँ?

गंगा

हिंदुओं में देवी के समान पूजनीय भारतवर्ष की सर्वाधिक पवित्र नदी गंगा को पौराणिक कथाओं के आधार पर गंगा माँ, विष्णुपदी, भागीरथी, पाताल गंगा, जाह्नवी, मंदाकिनी, देवनदी, सुरसरी, त्रिपथगा, आदि नामों से जानते हैं। पुराणों में उपलब्ध जानकारी के अनुसार गंगा नदी की उत्पत्ति भगवान विष्णु के चरणों से उत्पन्न पसीने से हुई है, जिसके कारण गंगा को विष्णुपदी के नाम से जाना जाता है। अन्य पौराणिक कथा के अनुसार राजा सागर के साठ हजार पुत्रों के उद्धार हेतु उनके वंशज राजा भागीरथी द्वारा कठोर तप कर गंगा नदी को पृथ्वी पर अवतरित करने के कारण गंगा का नाम भागीरथी पड़ा। इसी क्रम में भागीरथी नदी के अवतरण के समय उसके तीव्र वेग के कारण ध्यानमग्न ऋषि जाह्नु की तपस्या में विघ्न उत्पन्न होने पर क्रोधित होकर उन्होंने गंगा के सम्पूर्ण जल को कंठस्थ कर लिया, तथा बाद में देवताओं की प्रार्थना पर भागीरथी को अपने कर्ण मार्ग से मुक्त करने के कारण इसे ऋषि जाह्नु की पुत्री, जाह्नवी के नाम से जाना जाता है। महाभारत में गंगा नदी को अर्जुन द्वारा मृत्यु शैया पर लेटे भीष्म पितामह की प्यास बुझाने के लिए भूजल से उद्गमित करने का वृत्तांत भी मिलता है, जिसके कारण गंगा को पाताल गंगा के नाम से भी जाना जाता है।

अलकनंदा, भागीरथी नदी एवं पंच प्रयाग

उत्तराखंड के चार धामों में गंगोत्री, केदारनाथ एवं बद्रीनाथ से उद्गमित गंगा की धाराओं को क्रमश: भागीरथी, मंदाकिनी, एवं अलकनंदा के नाम से जाना जाता है। अलकनंदा नदी का पौराणिक नाम विष्णुगंगा है। उत्तराखंड में अपने कोलाहल भरे प्रवाह के कारण भागीरथी एवं अलकनंदा नदियों को क्रमश: सास-बहू के रूप में जाना जाता है। अपने उद्गम से भागीरथी संगम तक अलकनंदा देवप्रयाग तक पहुंचने से पहले धौली गंगा, नंदाकिनी, पिण्डर और मंदाकिनी से मिलती है। जिसके कारण उत्तराखंड में इस क्षेत्र को पंच प्रयाग कहा जाता है।

यमुना नदी

जमुना के नाम से प्रसिद्ध, यमुना नदी के नाम पुराणों में देवियों के नाम पर ऐशिता, आशिता, असीता, भानुजा, सूर्यतन्या, तरानिजा आदि वर्णित किए गए हैं। कालिंदी पर्वत से उद्गमित होने के कारण कादंबरी में यह नदी कालिंदी नाम से वर्णित है। यमुना को सूर्य एवं उनकी पत्नी छाया की पुत्री एवं मृत्युदेव यम की छोटी भगिनी कहा गया है। छाया के श्यामल वर्ण के कारण यमुना एवं उनके अग्रज यमराज का रंग भी श्यामल है। पुराणों में यमुना को श्री कृष्ण की पत्नी माना जाता है। सुखसागर में प्राप्त वर्णन के अनुसार वासुदेव कृष्ण के जन्म के समय कृष्ण को लेकर गोकुल जा रहे थे, तो यमुना अपने रौद्र रूप में थी, परंतु श्री कृष्ण के चरण स्पर्श कर वह शांत होकर सामान्य रूप में प्रवाहित होने लगी। यमुना नदी में ही कृष्ण द्वारा कालिया मंथन किया गया था।

सरस्वती नदी

ऋग्वेद में सरस्वती नदी को अम्बितम (श्रेष्ठ माता), नदितम (श्रेष्ठ नदी) एवं देवितम (श्रेष्ठ देवी) के अतिरिक्त अन्नवती तथा उदकवती के नामों से वर्णित किया गया है। हिन्दू पौराणिक ग्रंथों के अनुसार सरस्वती नदी को श्राप के कारण पृथ्वी पर अवतरित भगवान नारायण की पत्नी माना गया है। महाभारत में इस नदी के प्लक्षवती, वेदस्मृति, वेदवती आदि कई नाम हैं। महाकवि बाणभट्ट के ग्रन्थ 'हर्षचरित' के अनुसार एक बार बारह वर्ष तक वर्षा न होने के कारण ऋषिगण सरस्वती का क्षेत्र त्याग कर चले गए, परन्तु सरस्वती-पुत्र, सारस्वतेय वहाँ से कहीं नहीं गये। सुकाल होने पर जब वे ऋषि वापस लौटे तो वे सब वेद आदि भूल चुके थे। उनके आग्रह का मान रखते हुए सारस्वतेय ने उन्हें शिष्य रूप में स्वीकार किया और पुनः श्रुतियों का पाठ करवाया।

रामगंगा नदी

स्कंदपुराण के मानसखण्ड में रामगंगा नदी का उल्लेख रथवाहिनी के नाम से हुआ है। पौराणिक ग्रंथों में लोध्र-पर्वत शिखर (भटकोट) को जामदाग्नि ऋषि (परशुराम) की तपोभूमि बताया गया है। इसी कारण परशुराम के नाम पर ही इसका नाम रथवाहिनी पड़ा जो बाद में परिवर्तित होकर रामगंगा हो गया।

घाघरा या सरयू नदी

ऋग्वेद में उल्लेखित वैदिक कालीन घाघरा नदी को गोग्रा, कर्णाली, सरयू, सरजू, शारदा, आदि नामों से तथा बौद्ध ग्रंथों में सरभ के नाम से पुकारा गया है। इतिहासविद् कनिंघम ने इसे मेगस्थनीज द्वारा वर्णित सोलोमत्तिस नदी के रूप में चिन्हित किया है और ज्यादातर विद्वान टॉलेमी द्वारा वर्णित सरोबेस नदी के रूप में मानते हैं। पुराणों में सरयू नदी भगवान विष्णु के नेत्रों से प्रकट हुई है। आनंद रामायण के अनुसार प्राचीन काल में शंकासुर दैत्य ने वेद को चुरा कर समुद्र में डाल दिया। तब भगवान विष्णु ने मत्स्य रूप धारण कर दैत्य का वध किया था और ब्रह्मा को वेद सौंप कर अपना वास्तविक स्वरूप धारण किया। उस समय हर्ष के कारण भगवान विष्णु की आंखों से प्रेमाश्रु टपक पड़े जिन्हें ब्रह्मा ने मानसरोवर में डाल कर सुरक्षित कर लिया। इस जल को महापराक्रमी वैवस्वत महाराज ने मानसरोवर से बाहर निकाला। यही जलधारा सरयू नदी कहलाई। रामायण में वर्णित है कि सरयू अयोध्या से होकर बहती है जिसे दशरथ की राजधानी और राम की जन्मभूमि माना जाता है।

गोमती नदी

पुराणों के अनुसार गोमती नदी को ब्रह्मर्षि वशिष्ठ की पुत्री माना गया है। पौराणिक मान्यता के अनुसार रावणवध के पश्चात "ब्रह्महत्या" के पाप से मुक्ति पाने के लिये भगवान श्री राम ने भी अपने गुरु महर्षि वशिष्ठ के आदेशानुसार इसी पवित्र पावन आदि-गंगा गोमती नदी में स्नान किया था एवं अपने धनुष को भी यहीं पर धोया था और स्वयं को ब्राह्मण की हत्या के पाप से मुक्त किया था।

प्रधानमंत्री ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर 'मन की बात' में जल संरक्षण की बताई अहमियत



भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी हर महीने आकाशवाणी पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम 'मन की बात' के माध्यम से देश की जनता को संबोधित करते हैं। इस कार्यक्रम का पहली बार प्रसारण 3 अक्टूबर 2014 को हुआ था। यह देश की जनता से जुड़ने का एक सराहनीय प्रयास है क्योंकि आज भी दूरस्थ इलाकों में टीवी की पहुँच नहीं है लेकिन रेडियो के माध्यम से लगभग 90% जनता को संबोधित किया जा रहा है। मन की बात का 61वां एपिसोड हाल ही में 26 जनवरी को प्रसारित किया गया था। इस बार भी माननीय मोदी जी ने देश की जनता को हर महीने की तरह विभिन्न विषयों पर संदेश दिया और विभिन्न क्षेत्रों में अच्छा काम कर रहे लोगों की सराहना की। मन की बात का एक बड़ा हिस्सा जल संरक्षण व इस क्षेत्र में काम कर रहे लोगों को समर्पित था।

"हर महीने 'मन की बात' में, कुछ अपील, कुछ आह्वान, कुछ कर दिखाने के संकल्पों का सिलसिला चल पड़ता है। पिछले कई सालों में हमने कई छोटे-छोटे संकल्प लिये होंगे जैसे – 'No to single use plastic', 'खादी' और 'less cashEconomy' इत्यादि। ऐसे ढ़ेर सारे संकल्पों का जन्म हमारी इन हल्की-फुल्की मन की बातों से हुआ है।

स्वच्छता के बाद जन-भागीदारी की भावना, आज एक और क्षेत्र में तेजी से बढ़ रही है और वह है 'जल संरक्षण'। 'जल संरक्षण' के लिए कई व्यापक और innovative प्रयास देश के हर कोने में चल रहे हैं। मुझे यह कहते हुए बहुत ख़ुशी हो रही है कि पिछले मानसून के समय शुरू किया गया ये 'जल-शक्ति अभियान' जन-भागीदारी से अत्यधिक सफलता की ओर आगे बढ़ रहा है। बड़ी संख्या में तालाबों, पोखरों आदि का निर्माण किया गया। सबसे बड़ी बात यह है कि इस अभियान में समाज के हर तबके के लोगों ने, अपना योगदान दिया है। राजस्थान के झालोर जिले को ही देख लीजिये – यहां की, दो ऐतिहासिक बावड़िया कूड़े और गन्दे पानी का भण्डार बन गयी थी फिर भद्रायुं और थानवाला पंचायत के सैकड़ों लोगों ने 'जलशक्ति अभियान' के तहत इन्हें पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया। बारिश से पहले ही वे लोग, इन बावड़ियों में जमे हुए और गंदे पानी, कूड़े और कीचड़ को साफ करने में जुट गये। इस अभियान के लिए किसी ने श्रमदान किया, तो किसी ने धन का दान। इसी का परिणाम है कि ये बावड़ियां आज वहां की जीवन रेखा बन गई है। कुछ ऐसी ही कहानी उत्तर प्रदेश के बाराबंकी की भी है। यहाँ 43 Hectare क्षेत्र में फैली सराही झील अपनी अंतिम सांसे गिन रही थी लेकिन ग्रामीणों ने अपनी संकल्प शक्ति से इसमें नई जान डाल दी। एक-के-बाद एक कई गाँव आपस में जुड़ते चले गए। इन्होंने झील के चारों ओर एक मीटर ऊँचा तटबन्ध बना डाला। अब झील पानी से लबालब है और आस-पास का वातावरण पक्षियों के कलरव से गूंज रहा है।

उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा – हल्द्वानी हाइवे से सटे 'सुनियाकोट गाँव' से भी जन-भागीदारी का एक ऐसा ही उदाहरण सामने आया है। गाँव वालों ने जल संकट से निपटने के लिए खुद ही गाँव तक पानी लाने का संकल्प लिया। लोगों ने आपस में पैसे इकट्ठे किये, योजना बनी, श्रमदान हुआ और करीब एक किलोमीटर दूर से गाँव तक पाईप बिछाई गई। देशभर में 'जलसंरक्षण'से जुड़ी ऐसी अनगिनत कहानियां हैं, जो नये भारत के संकल्पों को बल दे रही हैं । आज हमारे जलशक्ति 'चैंपियंस' की कहानियाँ सुनने को पूरा देश उत्सुक है। मेरा आपसे अनुरोध है कि जल-संचय और जलसंरक्षण पर किये गये, अपने स्वयं के या अपने आसपास हो रहे प्रयासों की कहानियाँ, Photo एवं Video #jalshakti4India पर ज़रूर Share करें।"

हीराकुड बाँध, ओडिशा

- विश्व के सबसे लंबे बांधो में से एक है हीराकुड बाँध
- 60 मीटर ऊंचा और 4800 मीटर लंबा है हीराकुड बाँध
- स्वतन्त्रता के बाद भारत मे बनी यह पहली बहुद्देशीय नदी घाटी परियोजना है हीराकुड बाँध
- 100.02 करोड़ की लागत में पूरा हुआ हीराकुड बाँध
- विद्युत उत्पादन क्षमता 347.86 मेगावाट एवं वार्षिक सिंचाई क्षमता 2.67 लाख हेक्टर

मानव सभ्यता के विकास के बाद से ही मानसून के दौरान नदी के उपलब्ध जल को संचित करने तथा शुष्क अवधि के दौरान उसी जल का उपयोग करने के लिए बाँधों तथा जलाशयों का निर्माण होता रहा हैं। नदी के जल का सदुपयोग करने तथा सूखा एवं बाढ़ की समस्याओं को कम करने में बाँध और जलाशय विशेष भूमिका निभाते रहे हैं।

आज़ादी से पहले ओडिशा प्रांत महानदी में आने वाले निरंतर बाढ़ की समस्या से जूझ रहा था। बहुत सी जांच कमेटियों की रिपोर्ट आने के बाद ओडिशा सरकार की विनती पर डा.भीमराव अंबेडकर की अध्यक्षता में नवम्बर 1945 में कटक सम्मेलन आयोजित हुआ। डा. भीमराव अंबेडकर, जो श्रम विभाग के सदस्य थे, ने इस सम्मेलन में बाढ़ और सूखे की समस्या से निपटने और जल संरक्षण द्वारा बहुउद्देशों की पूर्ति के लिए नदी पर बाँध बनाने पर ज़ोर दिया। सर्वेक्षण और जांच का कार्य तत्कालीन केन्द्रीय जल आयोग के निर्देशन में प्रांतीय सरकार को सौंपा गया। केन्द्रीय जल आयोग के अध्यक्ष श्री ए. एन खोसला ने बाढ़ नियंत्रण, सिंचाई, जल विद्युत उत्पादन जैसे बहुउद्देश्यों की पूर्ति के लिए महानदी पर नारज, टीकरपारा और संबलपुर में बाँध के निर्माण की सलाह दी।

हीराकुड बाँध का निर्माण सन 1948 में प्रारम्भ हुआ और यह 100.02 करोड़ की लागत के साथ पूरा हुआ। इसके निर्माण में तत्कालीन केन्द्रीय जल आयोग का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण था। स्वतन्त्रता के बाद भारत में बनी यह पहली बहुद्देशीय नदी घाटी परियोजना है।

हीराकुड बाँध संबलपुर जिले में महानदी पर बना लगभग 60 मीटर ऊंचा और 4800 मीटर लंबा बाँध है। यह भारत में सबसे लंबा बाँध होने के साथ ही साथ विश्व के सबसे लंबे बांधो में से एक है। इस परियोजना की संस्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता 347.86 मेगावाट की है तथा वार्षिक सिंचाई क्षमता 2.67 लाख हेक्टर है। हीराकुड बाँध में 34 स्पिलवे रेडियल गेट हैं जिनकी स्पिलवे क्षमता 15 लाख क्यूसेक है। इसके जलाशय की सकल भंडारण क्षमता 8.1 बीसीएम है।

हीराकुड जलाशय में 24 घंटो का inflow forecast केन्द्रीय जल आयोग द्वारा जारी किया जाता है।



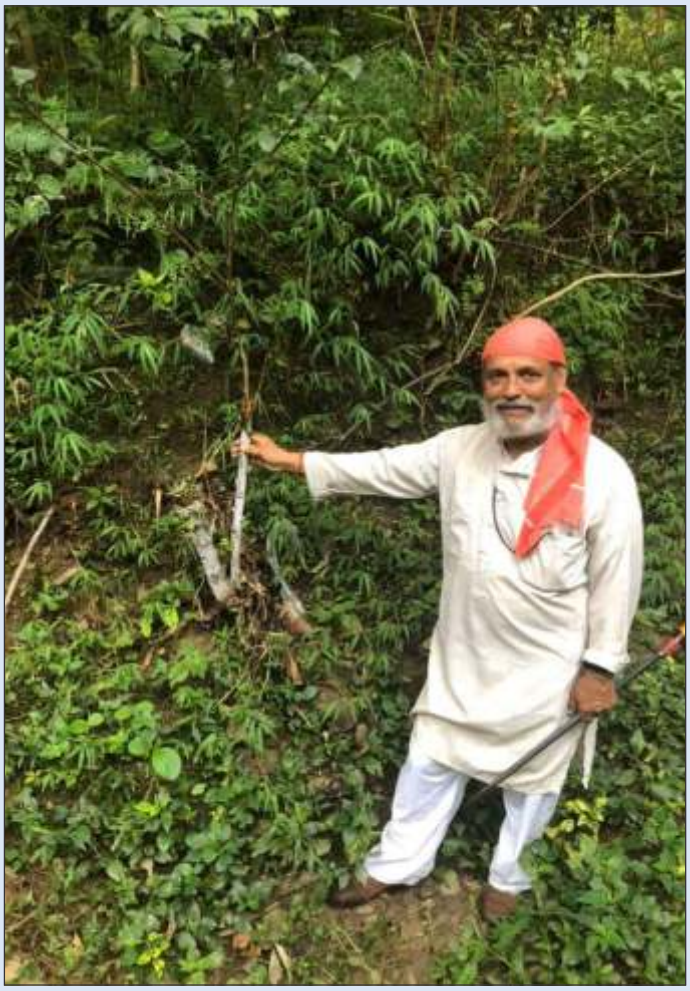
Work for community honoured with 'Padma Awards'

Every year on Republic Day, the awardees of one of the prestigious civilian honours of India, the Padma Awards are announced by the Government. The Awards are given in three categories: Padma Vibhushan (for exceptional and distinguished service), Padma Bhushan (distinguished service of higher order) and Padma Shri (distinguished service). The Award seeks to recognize works of distinction and is given for distinguished and exceptional achievements/service in all fields of activities/disciplines.

This year on 71st Republic Day, Dr. Anil Prakash Joshi and Sh. Popatrao Baguji Pawar were named for Padma Awards 2020. They have also been the speakers for 4th and 6th Water Talk organised by the Ministry every month, respectively.

Padma Shri Dr. Anil Prakash Joshi to receive Padma Bhushan

The man of the hills, Dr. Anil Joshi was born in a middle-class family in a small town Kotdwara of Uttarakhand. He did M.Sc, Ph.D. in Botany and became a reader at P.G. College. He was involved in social service since the beginning of his carrier as a teacher. His passion for social service was so high that he left his lucrative job for a social cause. In 1981, he founded HESCO (Himalayan Environmental Studies and Conservation Organisation) to focus on the economic and developmental needs of the Himalayan community. Dr. Joshi along with his team at HESCO has been applying knowledge of the environmental sciences and simple technologies to make best use of the local resources. He worked towards modernizing the traditional systems to bring consistent development to the rural villages of the Himalayas. Their innovative and ecologically-sound solutions have yielded outstanding results so far in their target regions, and have brought them national recognition. The local resources were efficiently used the abundantly found wild shrub on the hills called 'Kurri' was used to make furniture and incense sticks, the local water mill used to grind grain, 'gharat' was upgraded to produce electricity, and biological methods were used to stop landslides and soil erosion etc. Dr. Joshi had been honoured with the Padma Shri in 2006 for his contribution in promoting indigenous technologies. He has worked extensively with Himalayan communities. Now, the villagers of the hills are self-sufficient and are not dependent on urban centers and products for their livelihood. His instrumental efforts and commendable ideas have earned him the Padma Bhushan Award 2020.



Dr. Anil Prakash Joshi

PADMA AWARDS

Sarpanch Popatrao Baguji Pawar to receive Padma Shri

Hiware Bazaar, a small town of Ahmednagar district of Maharashtra was massively hit by drought some 30 years ago. The condition of the village was getting worse – dry wells, low agricultural yield and thus no source of income. The aftermath of this was depression, addiction to alcohol and high migration rates to cities. To overcome the situation, the youth of the village decided to appoint a young village head to change the course of the village.

In 1989, Popatrao Baguji Pawar was appointed as a village head (sarpanch) unanimously. Together with the villagers and using state government funds, he established several water bodies - earthen bunds, stone bunds, check dams, and percolation tanks to store rainwater in the village, as well as thousands of trees being planted. Today, the village has around 294 water wells and 40,000 contour trenches around the hills to conserve rainwater and recharge groundwater. Farming has now become the main source of income for the villagers. The village also focused on crops with less water footprint and abandoned the water-intensive crops. In addition, cattle farming led to an increase in revenue.

Open defecation, tobacco and alcohol consumption is strictly prohibited in the village, along with a ban on deforestation, grazing, and tube wells for irrigation. The village is thriving with each passing year, and it has attained a dignified living standard with earnings almost double that of most rural villages in India.

Pawar's dedication, hard work, and good governance, along with the support of the villagers, transformed Hiware Bazar from a drought-prone village to a green and prosperous model village. Ministry of Jal Shakri congratulates Shri Popatrao Pawar for being conferred with the honour of the Padma Shri Award 2020.





Popatrao Baguji Pawar

11th Water Talk by National Water Mission



The 11th Water Talk was held on 17th January 2020. Shri Balbir Singh Seechewal, a renowned environmentalist who spearheaded a river rejuvenation campaign in Punjab delivered the talk. Shri U.P. Singh, Secretary, DoWR, RD & GR, Ministry of Jal Shakti, officers from the Department and other organizations attended the program.

Shri Seechewal thanked NWM and the Ministry for recognizing his efforts and appreciating the need for up-scaling this model of public participation. He pointed out how sustainable management of water resources in India cannot be sucessful sans public participation. He pointed out some key challenges facing the management and restoration of rivers in India and made particular reference to the Kali Bein River. He asserted that a number of basins across India are simultaneously facing floods and drought-like situations. He further stressed on the need for rationalizing water management in India.

He added that the Seechewal model focused on the three key dimensions of river conservation. Firstly, wastewater from the nearby habitations was treated using aerobic and eco-friendly methods and the treated water was reused via underground pipelines for irrigation purposes. Secondly, to arrest the rapid extraction of groundwater in the region, thick layers of silt and sediments were removed in order to augment water table recharge. This yielded multipronged benefits including the increased inflow capacity of the river, speedy draining of excess water that prevented water logging etc. The third key element of this model, as he explained, entailed plantation on the banks of the rivers for their beautification.

Shri U.P. Singh enunciated key pillars of sustainability that defined Seechewal model. He stressed upon the significant role of sustained public engagement and lauded Shri Seechewal's vision to source the collective spirit of people to move forward the agenda of water management in a sustainable manner. He urged the audience to draw inspiration from Shri Seechewal's life-story and particularly his zeal to mobilize the power of people for delivering shared benefits.





'गंगा यात्रा' : उत्तर प्रदेश सरकार की नमामि गंगे के बारे मे जागरूकता हेतु अनूठी पहल



- 5 दिन तक चली भव्य गंगा यात्रा
- 'नमामि गंगे' से लोगों को परिचित कराने का प्रयास
- जागरूकता फैलावे के लिए प्रभात फेरी, नुक्कड़ नाटक, लघु फिल्म और गंगा प्रदर्शनी का आयोजन

हाल ही में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 5 दिवसीय गंगा यात्रा का आयोजन कराया गया जिसमें सरकारी पदाधिकारियों के अलावा स्थानीय लोगों, विद्यालयों एवं महविद्यालयों के छात्र - छात्राओं ने भी बढ़ चढकर हिस्सा लिया। नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा (एनएमसीजी) की भागीदारी भी यात्रा में महत्वपूर्ण रही। इस यात्रा में राज्य के 27 जिलों और 1038 ग्राम पंचायतों को शामिल किया गया। पहली यात्रा को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 27 जनवरी को बिजनौर से झंडी दिखाकर रवाना किया वहीं दूसरी यात्रा को इसी दिन उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने बलिया से रवाना किया।

बिजनौर से शुरू हुई पहली यात्रा में मुजफ्फरनगर, मेरठ, हापुड़, अमरोहा, बुलंदशहर, अलीगढ़, संभल, बदायूं, शाहजहाँपुर, कासगंज, फर्रुखाबाद, कन्नौज, हरदोई; और दूसरी यात्रा में गाजीपुर, चंदौली, वाराणसी, मिर्जापुर को कवर किया गया। यात्रा का उद्देश्य 'नमामि गंगे' कार्यक्रम के बारे में व्यापक जागरूकता पैदा करना और लोगों और समुदायों को स्वच्छ गंगा मिशन में शामिल करना था। यात्रा ने गंगा नदी के साथ होने वाली पारिस्थितिक चुनौतियों पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। पहली बार इतने बड़े पैमाने पर इस तरह के कार्यक्रम में सभी विभागों और सामान्य जन की भागीदारी देखी गई।

श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत (केंद्रीय मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय) बलिया से वाराणसी तक की यात्रा में शामिल हुए। श्री रतन लाल कटारिया (राज्य मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय) ने प्रयागराज में यात्रा को सम्बोधित किया। यात्रा के दौरान कई सार्वजनिक जागरूकता गतिविधियों का आयोजन किया गया। लोगों के समूह, विशेष रूप से स्थानीय समुदायों, स्कूल-कॉलेज के छात्रों, एनसीसी कैडेट्स, एनएसएस स्वयंसेवकों, महिलाओं और युवाओं के समूह ने प्रभात फेरी, नुक्कड़ नाटक, जागरूकता रैलियां, सफाई अभियान, प्रतिज्ञा, गंगा प्रदर्शनी, वृत्तचित्र सहित कई गतिविधियों के माध्यम से जागरूकता फैलाई। इस यात्रा के दौरान लघु फिल्मों का प्रदर्शन, सांस्कृतिक और नृत्य नाटक कार्यक्रम, गंगा आरती, वृक्षारोपण अभियान, सेमिनार और प्रतियोगिताएं इत्यादि भी आयोजित कराई गयी।

इन कार्यक्रमों के दौरान स्थानीय निवासियों को गंगा सफाई के प्रति संवेदनशील बनाने, एकल-उपयोग प्लास्टिक के दुष्परिणामों से अवगत कराने और जैविक कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया। यात्रा के दौरान लोगों को राज्य और केंद्र सरकार के विभिन्न जल संरक्षण कार्यक्रमों से भी परिचित कराया गया। इस यात्रा में कुल 29 जनसभाओं का, 257 स्वागत सभाओं का, 275 लोगों द्वारा मानव श्रृंखला का आयोजन और 1745 गंगा चौपालों का आयोजन प्रमुख स्थानों पर किया गया था। इसमें लगभग 15.53 लाख लोगों ने भाग लिया था। गंगा यात्रा, असल में 'नमामि गंगे' कार्यक्रम में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण कदम था।







The 9th meeting of Joint Group of Experts (JGE) on flood management between India and Royal Government of Bhutan was held during 7-8th January 2020 at Punakha, Bhutan. Shri T.S. Mehra, Commissioner, Brahmaputra and Barak (B&B) led the Indian delegation. Shri Mehra also visited the Punatsangchhu hydro-electricity project in Bhutan during the visit.



India-European Union joint team carried out survey and investigation on 4th January 2020 in Ramganga River for the assessment of environmental flows. Joint team included experts from European Union, Wildlife Institute of India, Central Water Commission, National Institute of Hydrology etc.



Shri R.K. Jain, Chairman, Central Water Commission (CWC) and his team visited Arun-3 Hydro Power Project (900 MW), Nepal from 19th January 2020 to 23rd January 2020 and inspected the undergoing construction works. The team had discussions with Satluj Jal Vidyut Nigam Ltd. (SJVNL) designers, project engineers. Various issues came across during the discussions. Arun-3 Hydro Power Project is being constructed in Nepal to generate 900MW power. This run-of-river project envisages construction of a 70m high dam and water will be transported through 9.5m diameter head race tunnel of 11.78 km length. CWC is providing design and engineering consultancy.

WATER WARRIOR

जल योद्धा-गूगल की नौकरी छोड़ तालाब और झीलों को साफ करने का उठाया जिम्मा

- गूगल की नौकरी छोड़कर अरुण कर रहें हैं जल संरक्षण
- 'हाइड्रोस्तान' के माध्यम से जल निकायों पर जागरूकता
- ईएफआई ने 14 राज्यों में 108 जल निकायों को पुनर्जीवित किया

21वीं शताब्दी में पर्यावरण के क्षेत्र में सबसे अधिक चर्चित मुद्दा है भूमिगत जल उपलब्धता में निरंतर ह्रास। लोग धीरे-धीरे इस गम्भीर समस्या से अवगत हो रहे हैं। जल संरक्षण करने के लिए कदम भी उठा रहे हैं। जल शक्ति मंत्रालय लोगों को इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता रहा है और जो लोग इस क्षेत्र में कार्यरत है उनकी सराहना भी करता है। जल चर्चा के प्रत्येक अंक में हम आपका परिचय एक 'जल योद्धा' से कराते हैं, हमारे इस अंक के जल योद्धा चेन्नई के निवासी अरुण कृष्णमूर्ति हैं।

चेन्नई भारत के उन शहरों में से एक है जो बढ़ते जल संकट के कारण चर्चा में हैं। यहाँ तालाब व झील तेजी से सूख रहे हैं जिस कारणवश भूमिगत जल का स्तर गिर रहा है। अरुण अपने प्रयासों से सूखे हुए तालाबों व अन्य जलाशयों को जीवित कर रहे हैं और उन्हें साफ़ रखने का संदेश लोगों तक पहुंचा रहे हैं। इन्होंने बहुत ही कम आयु में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य करना शुरू कर दिया था। अरुण पहले गूगल में नौकरी करते थे पर पर्यावरण से अधिक जुड़ाव के कारण उन्होंने यह नौकरी छोड़ दी और अपने लक्ष्य की तरफ काम करना शुरू कर दिया। अरुण बताते हैं कि वो ऐसी चेन्नई में बड़े हुए हैं जहाँ अनेक झीलें और तालाब हुआ करते थे इसलिए शायद उन्हें इन जलाशयों को संरक्षित करने के प्रति एक अलग उत्साह और अनुराग है।

अरुण कहते हैं कि अधिकतर लोग पर्यावरण की मौजूदा स्थिति से परिचित हैं और इस दिशा में कार्य भी करना चाहते हैं परंतु मार्गदर्शन की कमी और कुछ अन्य सीमाओं के कारण वे इस अभियान में भाग नहीं ले पाते। इस समस्या का हल निकालने के लिए उन्होंने Environmentalist Foundation of India (EFI) की स्थापना की। वे बताते हैं की ईएफआई एक ऐसा प्लेटफार्म है जो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में आम नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित करता है। यहाँ लोग स्वैच्छिक रूप से जलाशयों को साफ़ करने और उन्हें पुनर्जीवित करने में सहायता करते हैं। 13 वर्षों के अस्तित्व में ईएफआई ने 14 राज्यों में 108 जल निकायों को पुनर्जीवित किया है और इस दिशा में आगे भी कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध है।

अरुण केवल ग्राउंड पर ही नहीं बल्कि यूट्यूब के माध्यम से भी लोगों को जल संरक्षण की प्रेरणा देते हैं और उन्हें भारत के महत्वपूर्ण जल स्त्रोतों, जलाशयों और जल निकायों इत्यादि के बारे में जानकारी देते हैं। ईएफआई के ही



यूट्यूब चैनल पर वे 'Hydrostan' के नाम से एक सीरीज़ चला रहे हैं जिसमे वे हिन्दुस्तान के जल की कहानी बताते हैं। इसमें वे हर सप्ताह किसी एक जल निकाय पर विडियो बनाकर उसकी कहानी अपने दर्शकों के साथ साझा करते हैं। यह अवश्य ही लोगों को उनके आसपास के जल स्त्रोतों से परिचित कराने का एक बेहतरीन और अनूठा तरीका है।

अरुण सभी को यह संदेश देना चाहते हैं कि हमें अपने आसपास के जल निकायों के प्रति अधिक जागरुक होने तथा उनके प्रति अपनी ज़िम्मेदारी समझने की आवश्यकता है। हमारा 2020 का लक्ष्य ही 'From Whatever to Water Forever' होना चाहिए। यदि हम आसपास के जल स्त्रोतों से भली-भाँती परिचित होंगे और उन्हें स्वच्छ रखेंगे तो जल संरक्षण की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम होगा।



PEOPLE'S INITIATIVE

बूंद-बूंद संचयन में लगे हैं क्लब-60 मेरठ के सदस्य, प्रधानमंत्री ने भी की प्रशंसा

- 15 वरिष्ठ नागरिकों का संगठन है क्लब-60
- माननीय प्रधानमन्त्री की 'मन की बात' में 'क्लब 60' की प्रशंसा
- युवाओं के लिए हैं प्रेरणा के स्त्रोत

निरंतर गहराते जा रहे जल संकट से उबरने के लिए इस विषय पर गहरी समझ, जागरूकता और इस दिशा में सभी कारगर प्रयास करने की आवश्यकता है। मसलन जल संरक्षण ही जल संवर्धन है, इस आदर्श वाक्य को अपने जीवन में उतारना होगा ताकि कदम-कदम पर हम जल का अपव्यय रोक सकें। घटते जल प्रवाह और निरंतर बढ़ती जा रही गंदगी से हमारी नदियाँ दम तोड़ने लगी हैं। प्रतिबंध के बावजूद जहां-तहां जल स्त्रोतों में तैरती अवांछित अपशिष्ट सामग्री देखी जा सकती है। यह मनुष्य की लापरवाही का परिणाम है कि उसने कूड़े कचरे को निपटाने का सस्ता व सरल उपाय नदियों को समझ रखा है। आज भी बहुत से लोग मानते हैं कि धार्मिक आस्थाओं से जुड़ी चीजों को इधर-उधर फेंकने की जगह बहते जल में प्रवाहित करना ही उचित रहता है। बदलते वक्त की नई रोशनी में इस दकियानूसी सोच को सुधारने की जरूरत है ताकि जल दायिनी नदियां सदानीरा बनी रहें।

हमारे शिक्षित, सभ्य व संपन्न होने की सबसे पहली पहचान यही है कि हम अपनी जल संपदा से जुड़ी आज की चुनौतियों को समझें व तदनुरूप एक आदर्श नागरिक के रूप में निष्ठा पूर्वक अपने कर्तव्य निभा कर अपनी भूमिका का निर्वाह करें। जल स्त्रोंतों को साफ रखने व साफ करने की जिम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है। देश के प्रत्येक नागरिक का यह फर्ज है कि हम अपनी जल संपदा को गंदा न करें।

जीवन की संध्या में अधिकतर लोग आराम करते हैं, लेकिन मेरठ, उत्तर प्रदेश के 15 वरिष्ठ नागरिकों के द्वारा बनाए गए संगठन 'क्लब-60' ने व्यक्तिगत व सामुदायिक स्तर पर जल संरक्षण की दिशा में कई सफल कोशिशें की हैं व अपने उददेश्य में कामयाब भी हुए। शास्त्री नगर के एच ब्लाक की जय हिंद आवा सोसायटी में लॉन व पार्क की सिंचाई हेतु स्प्रिंकलर,पेड़ों की सिंचाई हेतु ड्रिप इरीगेशन सिस्टम,वर्षा जल संग्रहण हेतु चार रेन वाटर हारवेस्टिंग सिस्टम, पक्का टैंक, सड़कों का पानी कच्ची जमीन में ले जाने हेतु 16 नालियों का निर्माण कराया गया है। कालोनी में अब वाहन धोकर नहीं, पोछ कर साफ किए जाते हैं। आर ओ, एसी व किचन से निकले पानी को वाहनों की सफाई, गमलों व क्यारी की सिंचाई, फर्श की धुलाई आदि में पुनः उपयोग किया जाता है। अतः लोगों में पानी बचाने की आदत पड़ी व बढ़ी है। इन विविध प्रयासों से मेरठ क्षेत्र में जल संरक्षण का अनुकूल वातावरण बना है तथा लोगों का ध्यान पानी बचाने पर केन्द्रित होने लगा है।

30 जून 2019 को माननीय प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम में भी क्लब-60 मेरठ द्वारा जल संरक्षण की दिशा में किए जा रहे कार्यों की प्रमुखता से चर्चा की गई थी। ऐसे प्रयास हर जगह किए जाने जरूरी हैं। ऐसे संगठनो के कार्य न केवल उत्साह व उम्मीद की किरण जगाते हैं, बल्कि एक नई उर्जा देकर हमें प्रेरित भी करते हैं। इनके द्वारा किए जा रहे सतत प्रयास अनुकरणीय हैं।







युवा जल संरक्षण समिति के सदस्य श्री अभिषेक अरोड़ा और श्री नरेंद्र कुमार को मुरादनगर क्षेत्र में जहां भी कोई खराब टंकी दिखाई देती है वह वहां जाकर उसकी मरम्मत करते हैं। मुरादनगर क्षेत्र में लगभग एक हजार से ज्यादा टोंटियां युवा जल संरक्षण समिति अपने खर्चे से बदलवा चुकी है।जहां पर भी युवा जल संरक्षण समिति की टीम को पानी की टंकियों के द्वारा पानी बहता हुआ दिखाई देता है युवा जल संरक्षण समिति की टीम वहां जाकर पानी कि खराब टोटियों को बदलती है और इस तरह वह लगभग पिछले 3 साल में कई लाख लीटर पानी मुरादनगर क्षेत्र में बचा चुकी है। युवा जल संरक्षण समिति के सभी सदस्य इस कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं।



Motivation can help bring changes and this man from Odisha is a perfect example. Mr. Padmalochan Bagh from Rourkela, Odisha lives in a rented accommodation in Hyderabad. He motivated his house owner to install a simple rainwater harvesting pit and a drum to conserve rainwater that saves up to 5000 litres of water every month. Now as an initiative towards water conservation, he is visiting all the house owners in his locality and aims to do 100 such installations by convincing people to do their bit for water conservation.



The artists from 'Element the Art Community' came together to paint around 50 benches to spread awareness on water conservation, tree plantation, swachhata and say no to single-use plastic. Ruma Mehrishi from Juhu Humara provided the benches and dustbins which became the canvas for the artists to express themselves in support of the cause of water conservation.



जल की बरबादी रोकने के लिए स्वच्छ बरवाड़ा मिशन, सवाई माधोपुर, राजस्थान के सक्रिय सहयोगी श्री सत्येंद्र सिंह राजावत और श्री पूरण बाबा ने गढ़ से थाने तक के टोंटी रहित नलों में कैंप लगाकर हजारों गैलन साफ पीने योग्य जल को बेकार बहने से बचाया। कैप लगाने के साथ साथ मोहल्ले वासियों को जल का महत्व समझाया और साथ ही जल संरक्षण के उपाय भी बताये।









'Unity Ride' on Republic Day

On 26th January 2020, more than 700 bike riders from Delhi-NCR came together to spread awareness on "Say No To Single-Use Plastic" and "Save Water" through a 'Unity Ride'. All the riders carried Indian paper flags of which around 100 flags were seed flags (flags made of plantable seed paper that grow into a sapling). The ride started at 7:30 am. The riders gathered on the outskirts of Delhi near Ambience Mall and traveled to Max Adventure Camp, Mangar Village, Gurgaon-Faridabad Highway to spread awareness. They planted their flags in the soil, which shall soon raise many saplings.





A wedding in different style!

Along with Haldi, Sangeet and other ceremonies, Nitu and Subhadip, a newly-wed couple from Mumbai hosted a Tree Plantation ceremony on 30th January, the day of their wedding. The couple along with the guests planted 75 trees to spread the message of eco-friendly wedding and support Jal Shakti Abhiyan.

नमामि गंगे

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन ने गंगा व्याख्यान श्रृंखला का पहला सत्र आयोजित किया

- **राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन ने गंगा व्याख्यान श्रृंखला का पहला सत्र आयोजित किया, जिसमें डॉ.सुदीप्ता सेन को अतिथि वक्ता के रूप में बुलाया गया**
- **व्याख्यान श्रृंखला में डॉ. सुदीप्ता सेन ने अपनी पुस्तक 'Ganga: The Many Pasts of a River' पर बात की**

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन ने 3 जनवरी, 2020 को नई दिल्ली के नेशनल गैलरी ऑफ़ मॉडर्न आर्ट में 'गंगा व्याख्यान श्रृंखला' पर अपना पहला सत्र आयोजित किया। इस सत्र में डॉ. सुदीप्ता सेन ने अपनी हालिया पुस्तक 'Ganga: The Many Pasts of a River' पर लोगों को संबोधित किया।

डॉ. सुदीप्ता सेन, इतिहास के प्रोफेसर और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में मध्य पूर्व/दक्षिण एशिया अध्ययन कार्यक्रम के निदेशक हैं। उन्होंने अपनी नवीनतम पुस्तक 'Ganga: The Many Pasts of a River' के माध्यम से 2,500 किलोमीटर लंबी गंगा नदी के इतिहास और मिथकों पर प्रकाश डाला है। यात्रा वृत्तांत, इतिहास, भूविज्ञान और पौराणिक कथाओं को एक साथ एक किताब में पिरोते हुए डॉ. सेन ने इस सवाल का जवाब दिया है कि आखिर लाखों भारतीयों का गंगा नदी के साथ ऐसा भावनात्मक जुड़ाव क्यों है।

उन्होंने अपनी पुस्तक में गंगा के सन्दर्भ में दो परस्पर विरोधी विचारों का ज़िक्र किया है। पहले विचार के अनुसार भारतवासी गंगा को देवी की तरह मानते व देखते हैं। इसे भारतीय सभ्यता की प्राणवायु मानते हैं। दूसरे विचार में लोगों ने इसे केवल एक जल के स्त्रोत के रूप में देखा है, जो निरंतर प्रदूषित हो रहा है। यह दर्शाता है कि ये दो दृष्टिकोण वास्तव में किस तरह से संबंधित हैं और एक दूसरे को कैसे प्रभावित करते हैं। यह इस ओर भी संकेत करता है कि कैसे मनुष्य गण एक ही समय में गंगा की पूजा और उपेक्षा करते रहे हैं।

व्याख्यान के संवादात्मक सत्र में जल शक्ति मंत्रालय के सचिव श्री यूपी सिंह, श्री राजीव रंजन मिश्रा, डीजी, एनएमसीजी और डॉ. सुदीप्ता सेन ने दर्शकों के सवालों के जवाब दिए। श्री यूपी सिंह ने उन सभी विविध क्षेत्रों से भी श्रोताओं को अवगत कराया जिसमें एनएमसीजी काम कर रही है। उन्होंने कहा कि "नमामि गंगे एक एकीकृत संरक्षण मिशन है, जो न केवल गंगा की सफाई पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, बल्कि नदी को संरक्षित करने के साथ ही, जैव विविधता संरक्षण, आर्द्रभूमि संरक्षण, और विभिन्न अन्य पहलों पर भी ध्यान दे रहा है।"





प्रयागराज में आयोजित हुआ माघ मेला



गंगा जिसे भारत की सबसे महत्वपूर्ण व पावन नदी माना जाता है, आज उसकी स्वच्छता व उसे पुनः जीवित करने का मुद्दा देश भर में अहम बन गया है। प्रयागराज में 10 जनवरी से 23 फरवरी तक आयोजित हुए माघ मेले में राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) ने लोगों को गंगा के कायाकल्प के बारे में बताने तथा इस विषय पर और अधिक जागरूकता फैलाने के लिए एक प्रदर्शनी लगाई। स्वच्छ गंगा अभियान के बारे में जानने के लिए 'नमामि गंगे' की प्रदर्शनी में दर्शक भारी संख्या में आए। एनएमसीजी के अधिकारियों के अलावा गंगा टास्क फोर्स (जीटीएफ), केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सीआईएफआरआई), राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (एनईईआरआई) और गंगा विचार मंच (जीवीएम) के प्रतिनिधियों ने भी इस प्रदर्शनी में भाग लिया। जल शक्ति मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री रतन लाल कटारिया ने 30 जनवरी 2020 को माघ मेले में नमामि गंगे प्रदर्शनी का दौरा किया और बच्चों और स्थानीय लोगों से स्वच्छ गंगा परियोजना के बारे में बातचीत की।

स्नान की विशेष तिथियां

पौष पूर्णिमा- 10 जनवरी

मकर संक्रांति- 15 जनवरी

मौनी अमावस्या- 24 जनवरी

बसंत पंचमी- 30 जनवरी

माघी पूर्णिमा- 9 फरवरी

महाशिवरात्रि- 21 फरवरी





NEWS IN BRIEF



Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister for Jal Shakti reviewed the works in Ujh multipurpose (National) project, Jammu & Kashmir and Shahpur Kandi Dam (National) project, Punjab during 21st-22nd January 2020. Shri Kushvinder Vohra, Commissioner, State Projects (SPR), Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti accompanied the Minister during the visit.

Shri Gajendra Singh Shekhawat, Minister for Jal Shakti inaugurated the workshop on "Implementation of Jal Jeevan Mission in Rajasthan" and reviewed various Central Schemes of the Department with the officers of Government of Rajasthan on 23rd January 2020 at Jaipur.

The 3rd meeting of the Steering Committee on Performance Assessment of Irrigation Systems using Remote Sensing was held under the chairmanship of Shri U.P. Singh, Secretary, DoWR, RD & GR, Ministry of Jal Shakti on 15th January 2020. Officials from DoWR, RD & GR, Central Water Commission and World Bank attended the meeting. World Bank representatives presented their study on equitable and cost effective access to beneficial water, productive use of water and sustained hydrological ecosystem services.

मृदु जल : स्वास्थ्य पर कितना कठोर?

विश्व स्वास्थ संगठन की रिपोर्ट "Nutrients in Drinking Water 2005" में कहा गया था कि 'आर०ओ' का पानी सेहत को प्रभावित करता है। पीने के पानी की क्या गुणवत्ता होनी चाहिए? कितना टी.डी.एस. (Total Dissolved Solids) होना चाहिए? रिवर्स औस्मोसिस या आर.ओ. सिस्टम जल के शुद्धिकरण के लिए एक तकनीक है, जिसका प्रयोग जल में से अवांछित पदार्थों को निकाल कर जल को विभिन्न उपयोगों के योग्य बनाने के लिए किया जाता है। जल में यदि अधिक मात्रा में उपस्थित खनिज मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं, तो दूसरी ओर इसकी ज़रूरत से कम मात्रा भी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक हो सकती है। बिना अपनी ज़रूरत को जाने, देखा-देखी आर०ओ० सिस्टम लगवाना समाज में जैसे प्रतिष्ठा का एक सूचक होता जा रहा है। कोई भी तकनीक बुरी नहीं होती किन्तु उसका अंधाधुंध अनुकरण ठीक नहीं होता। यही आर०ओ० सिस्टम के साथ भी हो रहा है। अभी हाल ही में राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने अपने आदेश में कहा है कि यह जानना जरुरी है कि आर०ओ किन परिस्थितियों में प्रयोग किया जाना चाहिए, तथा अधिकरण ने 500 मिलीग्राम/लीटर से कम टीडीएस वाले पानी के लिए आर०ओ के प्रयोग को प्रतिबंधित करने का भी आदेश दिया है। बिना ज़रूरत के आर.ओ. सिस्टम लगवाने व मृदु जल के लंबे समय के सेवन से स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभावों की चर्चा करता वैज्ञानिकों का लेख CSMRS की वेबसाइट (http://csmrs.gov.in/) पर उपलब्ध है।

NEWS IN BRIEF





जल शक्ति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने जम्मू में आयोजित केंद्र सरकार की परियोजना पर समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की और प्रदेश में जल जीवन मिशन के विस्तृत पहलुओं पर चर्चा की। जम्मू कश्मीर के पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट के अंतर्गत 6 जिलों में 73.86 करोड़ की लागत से बनी 42 जल आपूर्ति योजनाओं का लोकार्पण किया। जम्मू के हीरानगर ब्लॉक के सरपंच गणों से भेंट कर ज़मीनी स्तर पर परियोजनाओं के क्रियान्वयन का जायज़ा लिया तथा विभिन्न सुविधाओं का लोकार्पण किया।

Shri Nitishwar Kumar, Joint Secretary, DoWR, RD & GR addressing participants at a training program organized by Housing & Urban Development Corporation's Human Settlement & Management Institute (HSMI) for overseas professionals on "Planning & Management of Sustainable Cities" on 27th January 2020 in New Delhi. The training program was attended by 27 delegates from 23 different countries.







In promotion of Jal-Jeevan-Hariyali Abhiyan, the Bihar government organised a human chain formation which was reportedly around 18,034 km long. Around 5.17 crore people took part in the event that took place on 19th Jan 2020. A human chain formed on boats by the people of Athar village was part of the full human chain.

NEWS IN BRIEF



The magnificent tableau of the Ministry of Jal Shakti, highlighting the Government's new initiative 'Jal Jeevan Mission' which aims at providing Functional Household Tap Connection (FHTC) to every rural household by 2024, was adjudged the best tableau, jointly with the NDRF tableau at the 71st Republic Day. Defence Minister Shri Rajnath Singh gave the best tableau Award to the Jal Jeevan Mission (JJM) tableau.



Shri P Vijayan, Chief Minister of Kerala inaugurated the 2-day National conference on "Policies and Strategies for Flood Management: Kerala Scenrio" under NHP & DRIP on 23rd January 2020 at Thiruvananthapuram, Kerala. Smt. T. Rajeswari, Additional Secretary, DoWR, RD & GR, Ministry of Jal Shakti attended the conference.



Shri Gajendra Singh Shekhawat, Union Minister for Jal Shakti released FICCI Compendium of 'Best Practices: Recognizing Excellence in Water Management & Conservation' at the 5th edition of 'India Industry Water Conclave' organized by FICCI India in New Delhi on 24th January 2020.



Connecting people to water through laughter

A new approach to water conservation was seen in the Banda district of Uttar Pradesh. Famous comedian, Shri Raju Srivastava was invited as the Chief Guest of Jal Aarti at Ken River to draw people's attention towards the river through laughter and happiness.

NEWS IN BRIEF



A Sahi Fasal workshop on "Increasing Water Use Efficiency in Agriculture" was organized by National Water Mission at Aurangabad, Maharashtra on 13th & 14th January 2020. Shri Rattan Lal Kataria, MoS, Ministry of Jal Shakti, Shri U.P. Singh, Secretary, DoWR, RD & GR, MoJS, officials of NWM & Maharashtra Water Resources Department and over 1000 farmers attended the workshop.



Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti addressed the gathering during a review workshop of Jal Shakti Abhiyan held in Vigyan Bhawan, New Delhi on 28th January 2020. He talked about the use of aquifer mapping in MGNREGA works among other things.



Shri U.P. Singh, Secretary, Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation, Ministry of Jal Shakti delivered the keynote address at the workshop on "Restoration of Polluted Water Bodies" organized by Central Pollution Control Board (CPCB) at the India Habitat Centre, New Delhi on 30th January 2020.



Shri K.C. Naik, Chairman, CGWB delivered the presidential address during the inaugural session of Public Outreach Workshop on Participatory Ground Water Management at GKVK, Bangalore on 11th January 2020.

NEWS IN BRIEF



National Institute of Hydrology (NIH) scientist team presented the findings of Rispana Rejuvenation Project to Hon'ble CM Uttarakhand on 25th January 2020.



NIH Scientists (Dr. D.S. Rathore and Dr. L.N. Thakural) with team collected snow samples at various locations near Chopta, Uttarakhand. The team also installed DGPS at Devariya Taal near Ukhimath for obtaining coordinates and altitude of snow sampling locations.



NIH and WRD Rajasthan jointly organized a training program on "Advance Hydrology" under National Hydrology Project from 6th to 10th January 2020 at Jaipur.



Shri Rajiv Ranjan Mishra, Director General, National Mission for Clean Ganga (NMCG) chaired the inauguration session of 'LSR-World Bank Case Study Competition' on Ganga Rejuvenation which focused on behavioural change. The event took place at the World Bank office in Lodhi Road, New Delhi on 17th January 2020.



राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर 24 जनवरी 2020 को राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान के कर्मचारियो को निदेशक द्वारा शपथ दिलाई गयी |

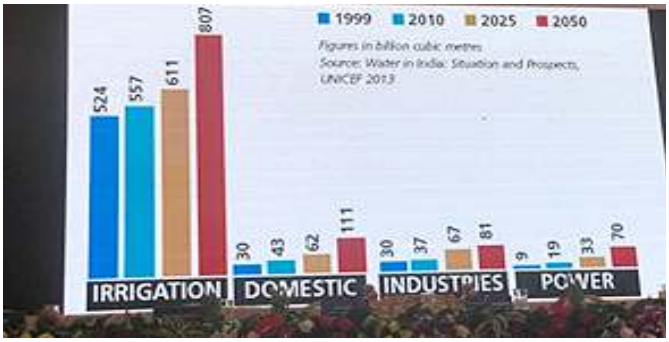


केन्द्रीय जल आयोग द्वारा "भारत में बाढ़ प्रबंधन" विषय पर द्वितीय तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन भुवनेश्वर में दिनांक 20 जनवरी 2020 को किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता केंद्रीय जल आयोग (जल योजना एवं परियोजना) के सदस्य श्री एस. के. हलदर ने की।

NEWS IN BRIEF



Capacity building of grass root level stakeholders on local groundwater issues and management by CGWB through the Tier III Training Program was organized at district Raichur, Karnataka on 23rd January 2020.



A presentation by Mrs. Anuradha Bhatia, Scientist D, CGWB on Ground Water and Demand-side Management during the workshop on Increasing Water Use Efficiency in Agriculture organized by National Water Mission at Aurangabad, Maharashtra on 13th January 2020.



Parliamentary Committee on Official Language visited the CGWB Chennai office during 14th to 16th January 2020. Smt. Rita Bahuguna Joshi, Hon'ble Convener of the Committee along with other MPs graced the occasion. A joint Official Language workshop for the officers and officials of regional and divisional offices of Chennai was also organised.



Public interaction programs under National Project on Aquifer Management on local groundwater issues and management were organized by CGWB in Puri, Khurdha, Cuttack, Charsuganda, Keonjhar districts of Odisha, Nagpur district of Maharashtra, Siddharthnagar district of Uttar Pradesh and Trivandrum district of Kerala in the month of January 2020.



Awareness raising programs on "Water Conservation and Artificial Recharge" were organised by CGWB in about 30 schools in Kerala, Odisha, Chattisgarh and Maharashtra in the month of January 2020.



Plastic free campaign and painting competition was organised by Central Ground Water Board at Raipur on 23rd January 2020.

NEWS IN BRIEF

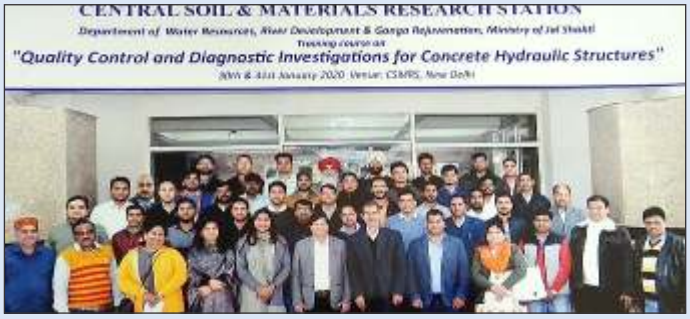




Central Soil and Material Research Station (CSMRS) visited the project sites of Polavaram Irrigation project, Andhra Pradesh, Bhaunrat Dam & Kanhar Irrigation projects in Uttar Pradesh, Kholonchhu Hydro-electricity project in Bhutan and Rain Water Harvesting structures in Mandi, Himachal Pradesh for field investigations in the month of January 2020.



As part of the Purpose Driven Studies (PDS), National Hydrology Project in the Upper Bhima catchment, infiltration test under Geophysical and Geohydrological investigation were carried out at 5 different locations in the Upper Bhima basin watershed, nearly 70 kms from Central Water and Power Research Station (CWPRS) near Ahmadnagar, to determine the intake capacity of soil so as to determine the natural recharge rate.



CSMRS organized a 2-day training course on "Quality Control and Diagnostic Investigations for Concrete Hydraulic Structures" for the working engineers of Central, State, Public Sector and Private Sectors on 30th & 31st January 2020. More than 40 trainees from 15 organisations/ projects attended the training course.



A purpose Driven Study (PDS) of Mula-Mutha was carried to identify the extent of causative factors responsible for the present deterioration of water quality under the National Hydrology Project (NHP) in Pune.

ग्रीन ड्रीम फाउंडेशन

NGO

- #PAINTMYCITY अभियान में शहर की दीवारों को पर्यावरण संरक्षण के संदेशों के साथ रंगा जा रहा है।
- फाउंडेशन द्वारा संचालित 'मन सागर झील' सफाई अभियान
- 150 से भी अधिक स्वयंसेवकों ने झील से 1.5 टन से अधिक कचरा निकाला

ग्रीन ड्रीम फाउंडेशन एक सामाजिक संगठन है, जो मुख्य तौर पर समाज को महत्वपूर्ण पर्यावरणीय विषयों, जैसे अपशिष्ट प्रबंधन, वायु प्रदूषण, जल संरक्षण इत्यादि पर जागरूक करने का कार्य करती है। यह फाउंडेशन लोगों को पर्यावरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण मुद्दों, उनसे सम्बन्धित समस्याओं व उनके दुष्परिणामों से अवगत कराती है। यह संगठन न केवल जागरूकता फैलाने का कार्य करती है अपितु सकारात्मक सामाजिक-पर्यावरणीय परिवर्तनों के विषय पर सभी आयु वर्ग के लोगों को एकजुट कर शिक्षित भी करती है और साथ ही साथ परामर्श के ज़रिए उनका मार्गदर्शन भी करती है।

यह संगठन ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों प्लेटफार्म पर जागरूकता अभियान चलाती है। यह लोगों को उनकी सामाजिक भागीदारी समझाने के लिए प्रेरित करती है। यह फाउंडेशन टेडएक्स और इकोथॉन जैसे प्रतिष्ठित मंचों के साथ-साथ दिल्ली विश्वविद्यालय,IIT रुड़की, चितकारा विश्वविद्यालय और अन्य कई शैक्षणिक संस्थानों में भी कार्यशालाएँ और संगोष्ठियाँ आयोजित कर चुकी है।

फाउंडेशन द्वारा संचालित फ्लैगशिप इवेंट में से एक 'इकोथॉन' भारत का पहला ऐसा प्लेटफ़ॉर्म है जिसे समग्र रूप से ई-अपशिष्ट प्रबंधन, जल प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और स्वच्छ ऊर्जा इत्यादि के लिए बनाया गया है। इसमें प्रतिभागियों को लोगों के स्वास्थ्य और पृथ्वी को बेहतर बनाने की दिशा में स्थायी जीवन शैली का नेतृत्व करने और अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता है।

ग्रीन ड्रीम फाउंडेशन ने जयपुर की वर्ल्ड हेरिटेज साइट 'मन सागर लेक' की सफाई का ज़िम्मा भी उठाया जिसका उद्देश्य केवल झील को साफ़ करने मात्र तक सीमित नहीं था बल्कि इसकी बढ़ती गंदगी की रोकथाम करना व इस समस्या के लिए समाधान खोजना भी था। जयपुर नगर निगम की सहायता से इस संगठन ने प्रदूषण के स्रोतों की पहचान की है और इनकी रोकथाम के प्रयास भी शुरु किए हैं। सफाई के अंतिम चरण में 150 से भी अधिक स्वयंसेवकों ने झील से 1.5 टन से अधिक कचरा निकाला और इसे स्वच्छ बनाने में फाउंडेशन की सहायता की।

पर्यावरण संबंधी मुद्दों को लेकर फाउंडेशन द्वारा संचालित कार्यक्रमों में से एक #PaintMyCity एक अनूठी पहल है जिसमें शहर की दीवारों को पर्यावरण संरक्षण के संदेशों के साथ रंगा जा रहा है। इस तरह की पहल उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में भी शुरू की गयी थी।

इस फाउंडेशन ने कुछ गाँवों के साथ एक समझौता भी किया है। इसमें ग्रामीणों को सस्ती दरों पर इको-फ्रेंडली ईंधन दिया जाता है। साथ ही इसके एवज में ग्रामीणजन संस्था की सामाजिक गतिविधियों के लिए श्रमदान भी करते हैं। इस कदम ने ग्रामीणों को प्रदूषणकारी ईंधन की पहचान कर उसे त्यागने के लिए प्रोत्साहित किया है। यह फाउंडेशन महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए उन्हें पर्यावरण संरक्षण से जुड़े उद्योगों में रोजगार उपलब्ध कराता है। फाउंडेशन द्वारा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अति सराहनीय कदम उठाए जा रहे हैं। किसी भी परिवर्तन के लिए लोगों को एकजुट कर के कार्य करना अनिवार्य होता है और वही कार्य ग्रीन ड्रीम फाउंडेशन कर रहा है।





Jal Shakti Abhiyan @JalShaktiAbhiyan

At the #JSA Review cum Workshop, Shri @gssjodhpur, Minister of #JalShakti congratulated Shri @SadhguruJV for the inspiring work he is doing along with @ishafoundation to improve the condition of Kaveri river. The #CauveryCalling initiative is inspiring many.



Business Standard @bsindia · 23h

The brighter side of saving #water

'Why Waste' initiative started by this Bengaluru student aims to change the mindset of people towards #waterconservation , writes @mswarnami

#savewater



Why Waste: An initiative showing people the brighter side of saving wat...
All of 23, this Bengaluru student runs an initiative, Why Waste, to change the mindset of people towards water conservation, writes Swarnami ...
business-standard.com

Subrat kumar sen @subratkumar1756 · Jan 19

43 million people, mainly school children formed 16500 km long human chain in my state, Bihar to promote afforestation and **water conservation**. People of all age came today on streets with full enthusiasm and took part in this historic event. It's the world's longest human chain.





जल शक्ति मंत्रालय

से जुड़ी खबरों की जानकारी के लिए

देखें:

जल शक्ति मंत्रालय का फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम पेज

mowrrdgr
MoJSDoWRRDGR
ministry_of_jal_shakti







Feedback



I had a great experience reading your magazine 'Jal Charcha'. It contains so much information about the activities going in the nation for water conservation. It is informative and inspiring. Keep up the good work!

Anchal Gaur
Gurgaon, Haryana

Let me thank you on behalf of Dainik Jagran for including me in your mailing list for the "Jal Charcha" magazine. I browsed through the magazine and it speaks about the volume of effort put into creating this. I am truly delighted to see the effort being made department under your leadership and combining the initiatives in the form of a magazine to make aware the target audiences.

Vikas Chandra
Vice President
Jagran Prakashan Ltd.



समस्त जैव मंडल के लिए अमृत तुल्य जल के महत्त्व एवं संरक्षण को प्रोत्साहित करती हुई 'जल चर्चा' पत्रिका एक अतुलनीय प्रयास है | वर्तमान की युवा पीढ़ी ही भविष्य की कर्णधार है, अतः शिक्षण संस्थानों एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थियों तक पत्रिका की अधिकाधिक पहुँच सुनिश्चित कीजिये | जल संरक्षण की दिशा में यह कदम एक मील का पत्थर सिद्ध होगा | पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनायें !

हर्षल अग्रवाल
सुदर्शन नगर, राजस्थान

IN NEWSPAPER

केंद्रीय सचिव ने एसटीपी का किया निरीक्षण

जगजीतपुर और सरायं में एसटीपी पर जताया संतोष, नमामि गंगे परियोजना के कार्यों में तेजी के दिए निर्देश



सीईटीएफ बटालियन ने मैकफर्सन झील को दिया नया जीवन

पर्यावरण संरक्षण



जल के प्रहरी और कल के रक्षक



लोगों को कुएं के जरिए पानी बचाने की विधि समझाते शिशिर और सहयोगी। • जागरण

समाज से जुड़े सरोकारों के प्रति लोगों को अपनी बात समझाना निहायत ही मुश्किल काम है, भले ही यह उनके आज और बच्चों के कल से ही क्यों न जुड़ा हो। कोई भी अपनी आदतें बदलना नहीं चाहता। ऐसे में कल्पना की जा सकती है कि जब डॉ. शिशिर और पुनीत ने पानी बचाने के लिए लोगों को जागरूक करने का बीड़ा उठाया होगा, तो उन्हें कितनी दिक्कतें पेश आई होंगी। फिर भी दोनों ने अपने प्रयासों की धार कुंद नहीं होने दी। गांव-गांव शहर-शहर जाकर जल चौपाल लगाने की उनकी कवायद रंग लाने लगी और लोग जल संरक्षण के प्रति सजग होने लगे। यह उनकी कोशिशों की ही चमक थी कि जल शक्ति मंत्रालय ने उन्हें 'जल प्रहरी' के सम्मान से विभूषित किया।

वॉटर एड इंडिया के प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर डॉ. शिशिर चंद्रा व पुनीत श्रीवास्तव ने गांव से लेकर शहर तक लोगों को पानी बचाने का महत्व समझाना शुरू किया। वॉटर वाइज के साथ शुरू किए गए इस कैंपेन के बारे में डॉ. शिशिर चंद्रा बताते हैं कि यह जनजागृति उप्र के बांदा जिले से शुरू हुई थी। सबके सहयोग से आज यह लखनऊ सहित उप्र के कई शहरों व गांवों तक पहुंच चुकी है। जगह-जगह जल चौपालों का आयोजन कर जहां लोगों को पानी की एक-एक बूंद बचाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

गांव व शहर के लिए अलग-अलग मॉडल तैयार किए गए। बांदा जिले में जहां सभी 470 पंचायतों में लोगों की ट्रेनिंग कर जल चौपाल के माध्यम से न केवल जल सहेजा गया बल्कि कुओं व नलकूप पर कंटूर ट्रेंच के टेक्निकल मॉडल तैयार किए गए। शहरी क्षेत्रों में रसोई व बाथरूम से निकलने वाले पानी को बचाने के लिए मॉडल बनाए गए। लोगों ने इन्हें तेजी से अपनाया और प्रयास सफल होता गया।

जागरूकता : कलाकृति से पानी बचाने का दिया संदेश



सेना कर रही गंगा में गिर रहे नालों की जांच



गंगा टास्क फोर्स मेजरी सरकार को रिपोर्ट

पानी पर प्रधानमंत्री की पहल याद रखेंगी पीढ़ियां

दुनिया के तमाम विशेषज्ञों की राय है कि अगर अगला विश्व युद्ध हुआ तो वह पानी को लेकर होगा। 2010 में स्टीवन सोलोमन ने अपनी बहुचर्चित किताब में लिखा था कि चीन, मिस्र और पाकिस्तान सहित दुनिया के अनेक देश जलसंकट से ग्रस्त हैं। अगर, पाकिस्तान में पानी की भयंकर कमी होती है तो परमाणु शक्ति संपन्न और आतंकवाद से ग्रस्त इस देश का अगला कदम क्या होगा? भारत में भी कमोबेश पानी को लेकर यही स्थिति है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अटल भूजल योजना शुरू करते हुए लोगों से जल संरक्षण को भी उसी गंभीरता से लेने की बात कही, जिस गंभीरता से उन्होंने स्वच्छता अभियान को लिया था। साथ ही किसानों से पीढ़ियों से चले आ रहे पानी की बर्बादी वाले सिंचाई के तरीके को बदलकर केवल फसलों की जड़ में पानी डालने की अपील की। यह तरीका जल अल्पता वाले इसराइल ने ईजाद किया था। किसानों को यह भी सलाह दी कि वे जबरदस्त पानी सोखने वाली फसलों की जगह अन्य फसलें पैदा करना शुरू करें। यह प्रयास प्रधानमंत्री की दूरदर्शी सोच का परिणाम है। ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारत में दुनिया की 16 प्रतिशत आबादी है, लेकिन पानी का हिस्सा केवल चार प्रतिशत है। आर्थिक सर्वेक्षण, 2018 के अनुसार पूरे देश में पानी की खपत का 89 प्रतिशत उपयोग खेती में होता है। मात्र धान और गन्ना के लिए 60 प्रतिशत से अधिक पानी खर्च किया जाता है। एक किलो धान और इतना ही गन्ना पैदा करने में 3000 से 5000 लीटर, जबकि कपास के लिए 22,000 लीटर पानी लगता है। गन्ना उगाने में जल का अधिक उपयोग तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश करते हैं, जबकि सबसे कम बिहार और उत्तर प्रदेश। क्या जरूरी नहीं है कि इन राज्यों में धान और गन्ने की फसल पैदा करने के तरीके को बदलकर पानी का खर्च कम करने को प्रोत्साहित किया जाए, और उत्तर प्रदेश व बिहार में इन फसलों को लगाने पर किसानों को अलग से आर्थिक मदद दी जाए? 2009 से 2018 के दस वर्षों के औसत के मुकाबले 2019 में देश में कुंओं में जलस्तर औसतन 61 प्रतिशत नीचे गया है और सबसे अधिक कर्नाटक में 80 प्रतिशत कम हुआ है। सोलोमन ने कहा था कि तेल का विकल्प था फिर भी तेल को लेकर लड़ाइयां हुईं, लेकिन पानी का तो विकल्प ही नहीं है।

350 गांवों के 24 हजार कार्यकर्ता बनाएंगे 40 हजार जल संरचनाएं

शिवजी का हलमा : एक मार्च को हाथीपावा पहाड़ी पर होगा श्रमदान, महीनों से की जा रही तैयारियां, गांव-गांव प्रशिक्षण का दौर





INSTITUTE

बेंगलुरु का ट्रायो वर्ल्ड अकादमी स्कूल दे रहा जल संरक्षण की सीख

- स्कूल ने की 50 लाख लीटर पानी की बचत
- भूमि व छत आधारित वर्षा जल संरक्षण
- पानी की बोतलों से प्रतिदिन 50 लीटर पानी की बचत

किसी भी देश का भविष्य उसकी आने वाली युवा पीढ़ी पर निर्भर करता है और इसलिए बच्चों को भविष्य की नींव भी कहा गया है। बच्चों को उनके घरों और विद्यालयों में इस तरह से प्रशिक्षित करने की ज़रूरत है कि वे सभी समस्याओं को समझें और उनके समाधान भी निकाल पाएं। 'ट्रायो वर्ल्ड अकादमी' नामक बेंगलुरु का एक विद्यालय बच्चों को इसी दिशा में तैयार कर रहा है। इस विद्यालय ने ऐसी अनेक पहल शुरू की हैं जिनका उद्देश्य वर्षा जल संरक्षण, भूजल पुनर्भरण और छात्रों को जल जैसे बहुमूल्य संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करने के बारे में शिक्षित करना है।

बेंगलुरु भारत के उन शहरों में से है जो जल संकट से जूझ रहे हैं। जल संकट से लड़ने के कई उपाय है, और उनमें से एक है रेन वाटर हार्वेस्टिंग। शहर के कई लोगों ने वर्षा जल को इकट्ठा करने के लिए अपने घरों में रीचार्ज पिट बनाना शुरू कर दिया है। जल की इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए ट्रायो वर्ल्ड अकादमी ने पानी बचाने की पहल शुरू की है।

वर्ष 2017 में इस विद्यालय में दो प्रकार के वर्षा जल संरक्षण के ढांचों का निर्माण कराया गया था। ये संरचनाएँ छत और भूमि आधारित हैं। छत पर इकट्ठे किए गए पानी का प्रयोग बागवानी के लिए किया जाता है वहीं जो पानी भूमि आधारित संरचनाओं में इकट्ठा किया जाता है वह भूजल स्तर को बढ़ाने में मदद करता है। विद्यालय परिसर में कुल 12 गड्ढे बनाए गए हैं, जिनमें से प्रत्येक की क्षमता 10 हजार लीटर है। इसके अतिरिक्त विद्यालय के अधिकतर नलों में Aerator भी लगवाए गए हैं। इनकी मदद से हर नल से लगभग 60% जल को बर्बाद होने से बचाया जा रहा है। ये Aerator स्कूल के लिए पानी बचाने के लिए कारगर सिद्ध हो रहे हैं। एक और अनूठी पहल, जो इस विद्यालय में देखने को मिलती है वह यह है कि यहाँ बच्चों को दिन के अंत में अपनी बोतलों के बचे हुए पानी को बड़े पात्रों में खाली करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। ये पात्र स्कूल के परिसर में और इसके आस-पास रखे गए हैं। छुट्टी के समय सभी बच्चे इन पात्रों में पानी डालते हैं और जिसके कारण बच्चों में पानी बचाने की भावना जाग्रत होती है। इस प्रकार से बच्चों को जल के महत्त्व के प्रति जागरूक करना एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

स्कूल के अधिकारियों का दावा है कि इन उपायों से पिछले दो साल में स्कूल ने करीब 50 लाख लीटर की बचत की है। इन प्रयासों से प्रेरणा लेते हुए कई बच्चों ने अपने घरों में भी जल संरक्षण के लिए कदम उठाए हैं। स्कूल के छात्रों को भी इस तरह की पहल से पानी की कमी जैसी गंभीर समस्याओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली है। यदि भारत के सभी विद्यालय इसी तरह के कदम उठाते हैं तो युवा पीढ़ी निश्चित रूप से गंभीर जल संकट को टाल सकती है।



जल की जुबानी

मैं जल हूँ सुनो मेरी जुबानी

मत करो मुझको बर्बाद, इतना तो तुम रखो याद,
प्यासे ही तुम रह जाओगे, मेरे बिना न जी पाओगे।

कब तक बर्बादी का मेरे, तुम तमाशा देखोगे,
संकट आएगा जब तुम पर, तब मेरे बारे में सोचोगे।

बरवाडा में रहने वालों को, मेरी जरुरत पड़ती है,
मेरी बर्बादी के कारण, मेरी उम्र भी घटती है।

ऐसा न हो इक दिन मैं, इस दुनिया से चला जाऊं,
खत्म हो जाए खेल मेरा, लौट के फिर न वापस आऊं।

पछताओगे-रोओगे तुम, नहीं बनेगी कोई बात,
सोचो-समझो करो फैसला, अब तो ये है तुम्हारे हाथ।

मेरे बिना इस दुनिया में, जीना सबका मुश्किल है,
अपनी नहीं भविष्य की सोचो, भविष्य भी इसमें शामिल है।

मुझे ग्रहण कर सभी जीव, अपनी प्यास बुझाते हैं,
कमी मेरी पड़ गई अगर तो, हर तरफ सूखे पड़ जाते हैं।

सतर्क हो जाओ बात मान लो, मेरी यही कहानी है।

करो फैसला मिलकर आज, मत करो मुझको बर्बाद,
इतना तो तुम रखो याद।

नल पर टोंटी लगाना हम सब का है अधिकार ,
मुझे ऐसे व्यर्थ न बहावो हो जावो सब खबरदार। ।
स्वच्छ बरवाडा मिशन

नफीस खान
जिला सवाई माधोपुर, राजस्थान

बह रहा पानी...

कहीं....गमलों में...बह रहा पानी,
कहीं किल्लत को सह रहा पानी।
कंठ....सूखे हैं अब... तालाबों के,
अब तो आंखों से..बह रहा पानी।

है जरुरी कि...चेत जाएं हम,
कदम ऐसे....कई उठाएं हम।
भावी पीढ़ी को भी मिले पानी,
पानी का मोल जान जाएं हम।

- हरि विश्नोई
क्लब-60, मेरठ

Share your suggestions & feedback at media-mowr@nic.in